6

पढ़ने-लिखने की अवधारणाएँ

AMNR — "ये आरती लिखा है।"

सोनिका कौशिक*

बच्चों का पढ़ना-लिखना सीखने के संदर्भ में विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे प्रयास इस ओर संकेत करते हैं कि शुरुआती सालों में पढ़ने-लिखने की अवधारणाओं की समझ और उस समझ का क्रियान्वयन अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस महत्वपूर्ण कार्य को बेहतर तरीके से करने के लिए इस संदर्भ में अब तक हुई शोधों के निष्कर्षों को भी एक बार ध्यान से देख-परख लिया जाए। पढ़ना-लिखना सीखने के संदर्भ में बच्चों के व्यवहार का अवलोकन और उसका विश्लेषण भी एक ज़रूरी प्रक्रिया है।

पिछले तीन से चार दशकों में बच्चों में भाषा के विकास तथा पढ़ने और लिखने की प्रक्रियाओं पर हुई शोध ने हमें एक नया परिप्रेक्ष्य दिया है। इस परिप्रेक्ष्य का एक अहम पहलू यह है कि पढ़ना और लिखना शैक्षिक प्रक्रियाओं के साथ-साथ सामाजिक प्रक्रियाएँ भी हैं जो उन सामाजिक परिवेशों से प्रभावित होती हैं जिनमें वे घट रही हैं। एक विशेष सामाजिक परिवेश में पढ़ने और लिखने का किन उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल होता है, यह इस्तेमाल कौन करता है, किस तरह की सामग्री का इस्तेमाल करता है आदि, उस सामाजिक संदर्भ में पढ़ने और लिखने की प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से परिभाषित करता है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चे पढ़ने-लिखने के बारे में बहुत-सी अवधारणाएँ बनाते हैं (क्ले, 1991)। ये अवधारणाएँ उनके पढ़ने-लिखने से जुड़े अनुभवों के सामाजिक और भाषायी संदर्भ में विकसित होती हैं। बच्चा पढ़ने-लिखने को लेकर क्या अवधारणाएँ बनाता है, यह इस पर निर्भर करता है कि बच्चा अपने परिवेश में पढ़ने-लिखने को लेकर किस तरह के अनुभव प्राप्त करता है या उसने किस तरह का अवलोकन किया है अथवा उसमें किस तरह से शामिल हुआ है। ये अवधारणाएँ पढ़ने-लिखने के विभिन्न उद्देश्यों (जैसे — अखबार पढ़ना, बैंक में चैक भरना, खरीदी जाने वाली या खरीदी गई चीज़ पर उसका दाम पढ़ना आदि) को लेकर हो सकती हैं।

प्रिंट (लिखित या छपी सामग्री) के विभिन्न पहलू होते हैं, जैसे — अक्षर-ध्वनि संबंध या शब्द की इकाई को पहचानना अथवा प्रिंट को पढ़ने की दिशा को जानना (जैसे देवनागरी बाएँ से दाएँ लिखी जाती है); मौखिक भाषा और लिखित भाषा के संबंध को

*वरिष्ठ सलाहकार, प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम, प्रारांभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110016

समझना, जैसे — 'नमक' शब्द को बोलने में ध्वनियों का क्रम और 'नमक' शब्द को लिखने में ध्वनियों का क्रम एक ही है। इन अवधारणाओं का विकास एक साथ हो सकता है, लेकिन इनका विकास बच्चों के पढ़ने-लिखने से जुड़े अनुभवों पर निर्भर करता है। इस रूप में शुरुआती वर्षों में स्कूल से पूर्व और गैर-शैक्षणिक संदर्भों में पढ़ने-लिखने के अनुभवों का महत्वपूर्ण स्थान है।

यह पर्चा इमरजेंट रीडिंग राइटिंग इवैल्यूएशन उपकरण (रोड्स, 1993) के इर्द-गिर्द बच्चे से की गई यह बातचीत पढ़ने-लिखने पर आधारित है। इस उपकरण के पहले हिस्से में बच्चे से चित्र बनाने और अपना नाम लिखने के लिए कहा जाता है जो कि इस पर्चे की पूरी चर्चा और उस चर्चा के विश्लेषण का केंद्र है। विश्लेषण से पहले बच्चे का प्रोफ़ाइल संक्षेप में दिया गया है। बच्चे का यह प्रोफ़ाइल उसके सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक व भाषायी परिवेश के संदर्भ को चित्रित करता है जो कि बच्चे के पढ़ने-लिखने की बन रही अवधारणाओं को समझने के लिए आवश्यक है (ओवॉक्की और गुडमैन, 2002)।

बच्चे का प्रोफ़ाइल

आरती तीन भाई-बहनों में सबसे छोटी है। उसकी उम्र साढ़े चार साल है। वह अपने निम्न मध्यवर्गीय परिवार के साथ दो कमरे के मकान में एक बड़े शहर में रहती है। उसके पिता तकनीकी सहायक हैं और उसकी माँ गृहिणी हैं। आरती एक प्री-स्कूल में जाती है। प्री-स्कूल में उसे अंग्रेज़ी भाषा के अक्षर और अंक सिखाए जाते हैं। उसे घर में 'आरती' नाम से पुकारा जाता है और स्कूल में उसका नाम अमनदीप कौर है। यही अमनदीप कौर नाम उसकी स्कूल की किताबों और कॉपियों पर रोमन लिपि में (सामान्यत: अंग्रेज़ी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती है) लिखा गया है। इसके अलावा, घर पर और आस-पड़ोस के लोग उसे 'आरती' कहकर ही पुकारते हैं। घर पर पढ़ने की सामग्री के नाम पर आरती और उसके भाई-बहन की स्कूल की किताबें और कॉपियाँ ही गिनी जा सकती हैं। घर पर आमतौर पर बातचीत पंजाबी भाषा में की जाती है, परंतु आस-पड़ोस में हिंदी का अधिक प्रयोग किया जाता है। पर्चे के अगले हिस्से में उपकरण के आधार पर आरती के साथ की गई गतिविधि का संक्षेप में विवरण दिया गया है।

चित्र बनाना और नाम लिखना

थोड़ी बातचीत के बाद मैंने आरती को चित्र बनाने के लिए कहा। शुरू में आरती चित्र बनाने में थोड़ा संकोच कर रही थी, लेकिन मेरे कुछ और आग्रह करने पर आरती ने बड़े ध्यान के साथ चित्र बनाना शुरू किया। शुरुआती हिचकिचाहट के बाद उसके चित्र बनाने में

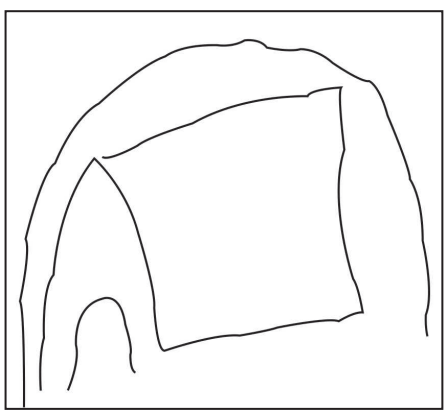

आरती द्वारा बनाया गया घर का चित्र

Chapters- PS-April 2016.indd 34 27-07-2017 PM 12:51:59

गति और आत्मविश्वास दोनों नज़र आ रहे थे। मेरे पूछने पर उसने बताया, "ये घर है।"

इसके बाद मैंने आरती को जब उसका नाम लिखने के लिए कहा तो उसने कहा कि उसका नाम उसकी माँ लिखती हैं। मेरे अनुरोध करने पर उसने पूछा कि क्या वह A, B, C, D, लिख सकती है। मैंने उसे आश्वस्त किया कि वह जैसे अपना नाम लिख सकती है वैसे ही लिखे। मेरी इस गुज़ारिश में कहीं भी यह सुझाव नहीं था कि उसे हिंदी या अंग्रेज़ी भाषा की लिपि में लिखना है। अपना नाम लिखने के लिए आरती ने रोमन लिपि का चयन किया। आरती ने पहले अक्षर 'A' लिखा फिर कुछ सोच कर 'M' और 'N' अक्षर लिखे। वह फिर रुक गई और कुछ क्षणों के बाद 'R' अक्षर लिखा। मेरे यह पूछने पर कि क्या उसने अपना पूरा नाम लिख लिया है तो उसने जवाब दिया कि उसने 'आरती' लिखा है। यदि हम 'आरती' के लिखे इन चारों अक्षरों पर गौर करें तो हम पाते हैं आरती की प्रिंट के बारे में कुछ विकसित हो रही है।

पर्चे के अगले हिस्से में आरती के इस लेखन पर एक विश्लेषणात्मक टिप्पणी प्रस्तुत है।

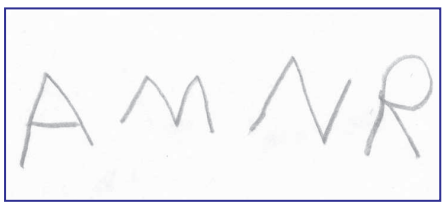

आरती ने अपना नाम लिखा

आरती ने आखिर क्या लिखा

आरती ने अपना नाम AMNR लिखा और पूछने पर बताया कि उसने आरती (ARTI) लिखा है। A, M, N, R अक्षरों का इस्तेमाल करते हुए आरती ने अपना नाम लिखा जिनमें से दो अक्षर M और N आरती (ARTI) नाम की वर्तनी में शामिल ही नहीं हैं। आरती के इस लेखन का विश्लेषण दो भिन्न परिप्रेक्ष्यों से किया जा सकता है। पहला परिप्रेक्ष्य यह हो सकता है कि आरती को स्कूल में सिखाए जा रहे अंग्रेज़ी भाषा के कुछ अक्षरों में से उसने बिना सोचे-समझे चार अक्षर लिख दिए। इन चार अक्षरों में से A और R अक्षरों के इस्तेमाल को फिर भी समझा जा सकता है, क्योंकि इनकी ध्वनियाँ ARTI शब्द की वर्तनी लिखने में शामिल हैं।

आरती के लेखन को समझने का एक दूसरा परिप्रेक्ष्य भी हो सकता है। यह दूसरा परिप्रेक्ष्य इस बात की माँग करता है कि हम इस बात पर गौर करें कि आखिर आरती ने रोमन लिपि के 26 अक्षरों में से केवल M और N अक्षरों का इस्तेमाल ही क्यों किया। इस बिंदु को समझने के लिए आरती के पारिवारिक-सामाजिक संदर्भों पर गौर करना बेहद आवश्यक है—

- आरती ने पिछले साल से ही स्कूल जाना शुरू किया है और स्कूल के औपचारिक माहौल में उसे 'अमनदीप कौर' नाम से पहली बार संबोधित किया जाने लगा। इस तरह, पिछले एक साल में ही आरती का अपने इस औपचारिक नाम से परिचय हुआ है।
- स्कूली परिवेश में ही आरती ने पहली बार अपने औपचारिक नाम (अमनदीप कौर) को लिखित रूप में देखा (प्रिंट)। हम यह मान सकते हैं कि 'आरती' नाम लिखा हुआ देखने की संभावना बहुत ही कम रही होगी।

Chapters- PS-April 2016.indd 35 27-07-2017 PM 12:51:59

- स्कूल के अलावा, उसके निजी परिवेश और अन्य सामाजिक संदर्भों में उसे 'आरती' के नाम से ही पुकारा जाता है।

इन समस्त बिंदुओं को नीचे दी गई तालिका में संक्षेप में देखा जा सकता है —

ARTI (आरती)	AMANDEEP KAUR (अमनदीप कौर)
घर का नाम	स्कूल का नाम
अनौपचारिक संदर्भ	औपचारिक संदर्भ
केवल मौखिक भाषा में प्रयोग	मौखिक और लिखित भाषा दोनों में प्रयोग
प्रिंट में लिखा हुआ नहीं देखा है	प्रिंट में लिखा हुआ देखा है

तालिका में दिया गया विवरण इस ओर संकेत करता है कि घर के सहज और बेफ़िक्र वाले माहौल में उसे जिस नाम से पुकारा जाता है और जिस नाम से ज़्यादा जुड़ाव है संभवत: उस नाम को आरती ने कभी लिखा हुआ नहीं देखा। जबकि अपने औपचारिक नाम, जिससे उसे एक विशेष संदर्भ, स्कूल में संबोधित किया जाता है सिर्फ़ उसे ही अपनी किताबों और कॉपियों पर लिखा देखा है। 'अमनदीप कौर' और 'आरती' — इन दोनों नामों में एक समानता भी है और वह है उनका व्यावहारिक पक्ष। दोनों नामों का इस्तेमाल संबोधन के लिए किया जाता है। पर अमनदीप कौर (AMANDEEP KAUR) नाम का एक अतिरिक्त आयाम भी है। वह यह है कि आरती की किताबों और कॉपियों पर लिखा AMANDEEP KAUR कक्षा में दूसरे बच्चों की किताबों और कॉपियों में से आरती की किताब और कॉपी अलग करने या पहचानने में मदद करता है। आरती ने कभी इस लेबल का इस्तेमाल किया हो, यह हम आरती से हुई बातचीत के आधार पर नहीं कह सकते। लेकिन हम यह ज़रूर कह सकते हैं कि आरती ने अपना नाम AMANDEEP KAUR लिखा हुआ देखा है या फिर अपनी माँ को किताबों और कॉपियों पर नाम लिखते देखा है (जैसा कि आरती ने बताया)।

आरती से जब उसका नाम लिखने के लिए कहा गया तो उसने *A, B, C, D,* लिखने का विकल्प सुझाया। यह विकल्प आरती की समझ के बारे में यदि इस बात का इशारा करता है कि आरती abcd लिखने और अपना नाम लिखने में कुछ समानता पाती है तो *a b c d* लिखने और नाम लिखने के बीच के फ़र्क को भी समझती है। नाम लिखने के लिए उसे यह मालूम है कि *a b c d* का इस्तेमाल तो करना ही होगा। लेकिन इसके साथ नाम लिखने में *a b c d* का एक विशेष रूप से इस्तेमाल होगा जिसमें अक्षर आकृति और अक्षर ध्वनि संबंध का नियमबद्ध और सुनियोजित प्रयोग चाहिए। हालाँकि उसमें अपना नाम लिख पाने का आत्मविश्वास शायद पूरी तरह से नहीं था। यही कारण था कि उसने उसका सबसे करीबी विकल्प (जो उसके लिए लिख पाना संभव था) सुझाया।

इस बात का ज़िक्र भी महत्वपूर्ण है कि आरती से पढ़ने-लिखने के उपकरण के इर्दगिर्द बातचीत भी आरती के घर पर ही हुई थी जहाँ उसे 'आरती' कहकर पुकारा जाता है। हमारी बातचीत और क्रियाकलाप का संदर्भ भी घर का अनौपचारिक माहौल ही था।

Chapters- PS-April 2016.indd 36 27-07-2017 PM 12:51:59

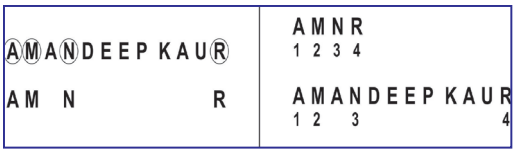

अब हम अपना ध्यान आरती ने जो नाम लिखा (AMNR) उस पर लाते हैं और उसकी तुलना उस प्रिंट (AMANDEEP KAUR) से करते हैं जो उसने अकसर स्कूली संदर्भ में लिखा हुआ देखा है। यह स्वत: स्पष्ट हो रहा है कि आरती ने AMNR लिखने में उन्हीं अक्षरों का इस्तेमाल किया है जो AMANDEEP KAUR में शामिल हैं। AMNR में अक्षरों के इस्तेमाल का क्रम भी वही है जो AMANDEEP KAUR में है।

इससे हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि आरती ने अपना नाम लिखने में उन संकेतों (या ज्ञान) का इस्तेमाल किया है जिनका उसने रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अवलोकन किया है और जो उसके अनुभव का हिस्सा हैं। आरती को यह संकेत तीन अलग अनुभव स्रोतों से मिल रहे हैं—

- AMANDEEP KAUR नाम अपनी कॉपी-किताब पर लिखा देखना।
- प्री-स्कूल में अक्षर-आकृतियों को लिखने का अभ्यास करना।
- आरती नाम से अनौपचारिक संदर्भों में संबोधित किया जाना।

इन तीनों स्रोतों से मिल रहे संकेतों के सामंजस्य से AMNR लिखना संभव हो पाया। इस संदर्भ में एक और बात गौरतलब है कि आरती ने भाषा के न केवल मौखिक और लिखित रूप को जोड़ा है, बल्कि भाषा के व्यावहारिक और स्वरूपगत पक्षों को भी जोड़ा है। प्री-स्कूल में सिखाई जा रही अर्थहीन और संदर्भहीन a b c d के आकृति-अभ्यास को अपने व्यक्तिगत और अर्थपूर्ण नाम के संदर्भ में इस्तेमाल किया है। इन तीन स्रोतों में से आकृति-अभ्यास में ही आरती की सक्रिय भूमिका देखी जा सकती है। बाकी दो में आरती एक सामाजिक स्थिति और परिवेश का सदस्य होने के नाते उसका अनुभव करती है। आरती के अनुभव में अपना नाम AMANDEEP KAUR लिखा हुआ देखना है। लेकिन वह अपना नाम 'आरती' ही सुनती है। शायद इसलिए आरती ने जो लिखा है उसमें ज़्यादा प्रभाव प्रिंट में देखे गए नाम का है। इस तरह कहा जा सकता है कि मौखिक भाषा और लिखित भाषा का यह जुड़ाव अर्थ के स्तर पर हो रहा है (क्ले, 2010)। 'नाम' बेहद निजी होता है। बच्चे के नाम का उसके अस्तित्व के साथ बेहद गहरा रिश्ता है; 'नाम' केवल एक लेबल न होकर इस दुनिया में उसके होने का सूचक है।

आरती की पढ़ने-लिखने के बारे में विकसित होती समझ का एक और पहलू सामने आता है। अपना नाम लिखने में आरती बहुत ज़्यादा अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल कर रही हो, ऐसा नज़र नहीं आता। AMNR और ARTI में, दोनों में ही चार अक्षरों का इस्तेमाल है और दो अक्षर समान हैं—यह एक इत्तेफ़ाक है। दोनों में 'R' की जगह अलग है और 'M' और 'N' का इस्तेमाल समझना मुश्किल है। इस पर पहले ही विस्तार में चर्चा हो चुकी है।

आरती के पढ़ने-लिखने के किन पहलुओं का विकास हो रहा है, इसका संकेत हमें आरती के लेखन

Chapters- PS-April 2016.indd 37 27-07-2017 PM 12:51:59

के उदाहरण से मिल रहा है। इस पर्चे में आरती की पढ़ने-लिखने की विकसित हो रही समझ के बारे में निम्न बातें सामने आती हैं—

- वह मौखिक और लिखित भाषा में संबंध जोड़ती है।
- अपने नाम से गहरा भावात्मक लगाव और उसका सामाजिक-व्यावहारिक पक्ष मौखिक और लिखित भाषा के बीच संबंध बनाने के लिए एक अर्थपूर्ण संदर्भ बनाता है।
- वह अंग्रेज़ी भाषा (रोमन लिपि) के अक्षरों (अपर केस) के नाम जानती है और उन अक्षरों की आकृति लिख सकती है।
- वह चित्र बनाने और लिखने में फ़र्क समझती है।

आरती के लेखन का यह उदाहरण हमें प्रारंभिक वर्षों के बच्चों के पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को समझने और सराहने के लिए प्रेरित करता है। बच्चों के लेखन का हर नमूना एक 'खिड़की' (क्ले, 1991) है जो हमें उनकी विकसित होती अवधारणाओं का नज़ारा दिखाती है। ज़ाहिर है कि पढ़ना-लिखना केवल सही और गलत के पैमाने पर परखने से हम शायद बच्चों की विकसित हो रही क्षमताओं के प्रति असंवेदनशील बन जाएँ। अत: यह ज़रूरी है कि हम बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रियाओं का गहन अवलोकन और विश्लेषण करें। यह अवलोकन और विश्लेषण बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में हमारी मदद कर सकता है।

संदर्भ

ओवॉक्की, ग्र और ये गुडमैन. 2002. *किड वॉचिंग*. हाईनमन एजुकेशन, पोर्ट्समाउथ.

क्ले, मे. मि. 1991. *बिकमिंग लिटरेट*. हाईनमन एजुकेशन, न्यूज़ीलेंड.

———. 2010. *हाउ वैरी यंग चिल्ड्रन एक्सप्लोर राइटिंग*. हाईनमन एजुकेशन, पोर्ट्समाउथ.

रोड्स, लि. के. 1993. *लिटरेसी असेसमेंट — ए हैंडबुक ऑफ़ इंस्ट्रूमेंट्स*. हाईनमन एजुकेशन, पोर्ट्समाउथ.

Chapters- PS-April 2016.indd 38 27-07-2017 PM 12:52:00